प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 11 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

सही समय पर सही चुनाव करने वाला व्यक्ति सदैव सफलता प्राप्त करता है। चुनाव में असावधान व्यक्ति कभी सफलता के शृंगों पर नहीं चढ़ पाता। जो व्यक्ति अपने दैनिक कार्यक्रमों में सजगता के साथ उपयुक्त चुनाव नहीं करता और महत्व की दृष्टि से उनमें ठीक–ठाक क्रम नहीं बिठा पाता वह व्यक्ति न ठीक समय पर कोई कार्य पूरा कर पाता है और न ही कोई उद्देश्य निर्धारित कर पाता है। हमें एक तालिका बना कर यह निश्चित कर लेना चाहिए कि हमें किस समय सोना है, किस समय उठना है और किस समय, क्या और कितना खाना है तथा किस समय अध्ययन करना है। खेल–कूद और व्यायाम के लिए भी समय का चुनाव करना श्रेयस्कर है। जो समय का ध्यान रखते हैं वे अपने कार्यों को रचनात्मक ढंग से संपन्न कर पाते हैं। चुनाव करते समय, हमें अपने मित्रों और सहयोगियों के प्रति भी बहुत सावधानी बरतनी होगी। यह चुनाव हमारे जीवन की अनेक सफलताओं और असफलताओं के लिए जिम्मेदार हो सकता है। उचित चुनाव का कोई विकल्प नहीं है और न वे अपने समय का मूल्य ही समझ पाते हैं जो ठीक समय पर उपयुक्त चुनाव करना नहीं जानते।

1. जीवन में सफलता की ऊँचाई पर पहुँचने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण क्या है? 2

उत्तर : जीवन में सफलता की ऊँचाई पर पहुँचने के लिए उचित समय पर उचित चयन करना सबसे महत्त्वपूर्ण है। उपयुक्त चुनाव से ही व्यक्ति सफलता प्राप्त कर सकता है।

2. किस तरह के लोग अपने कर्मों को सुंदर और कलात्मक रूप में नहीं कर पाते? 2

उत्तर : जो व्यक्ति समय को नियोजित नहीं करते वे अपने कर्मों को सुंदर और कलात्मक रूप में नहीं कर पाते। उन्हें अपने कार्य को कलात्मक रूप से करने के लिए अपने समय को नियोजित करना पड़ेगा।

3. दैनिक जीवन में किन बातों के बीच चुनाव करना महत्त्वपूर्ण है? 2

उत्तर : दैनिक जीवन में दिनचर्या के सभी कार्यों में चुनाव करना महत्त्वपूर्ण है। हमें किस समय, क्या, कितना और कैसे करना है, इन सभी के लिए समय का चुनाव करना श्रेयस्कर होता है।

4. कोई व्यक्ति अपने जीवन में सफल या असफल क्यों होता है? 2

उत्तर : सफल होने के लिए व्यक्ति का प्रतिभाशाली होना जरूरी नहीं है। बल्कि जो व्यक्ति समय का सदुपयोग, चुनाव में सावधानी तथा दैनिक कार्यों में सजगता रखता है वह निश्चित सफल होता है। इसके विपरीत जो ऐसा नहीं करता वह असफल होता है।

5. 'श्रेयस्कर' शब्द का क्या अर्थ है? 1

उत्तर : 'श्रेयस्कर' शब्द का अर्थ है– कल्याणकारी।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : उपयुक्त चुनाव।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. चाय तैयार हुई, उसने वह प्यालों में भरी। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : चाय तैयार हुई और उसने वह प्यालों में भरी।

2. कर्म करने वाले को फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जो कर्म करता है उसे फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए।

3. वह घर आया और उसने भोजन किया। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : उसने घर आकर भोजन किया।

4. आकाश में बादल छाते ही अंधेरा हो गया। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : आकाश में बादल छाए और अंधेरा हो गया।

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. नानी कहानी सुनाती थी। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : नानी द्वारा कहानी सुनाई जाती थी।

2. अब चलें। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : अब चला जाए।

3. राम से पढ़ा नहीं जाता। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : राम नहीं पढ़ता।

4. अब प्रधानमंत्री नहीं आएँगे। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : अब प्रधानमंत्री से नहीं आया जाएगा।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. आज तक मैं उससे उबर नहीं पाई हूँ।

उत्तर : क्रियाविशेषण, कालवाचक, उबरना क्रिया का विशेषण।

2. वे अपने देश पर मर मिटे।

उत्तर : सर्वनाम, अन्य पुरुषवाचक, बहुवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।

3. दरवाजे पर कोई खड़ा है।

उत्तर : सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक।

4. परिश्रमी छात्र सदा सफल होते हैं।

उत्तर : विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, 'छात्र' विशेष्य।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. निम्न पंक्तियों में रस-पहचान कर लिखिए।

"मैं सत्य कहता हूँ सखे! सुकुमार मत जानो मुझे।
यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा जानो मुझे।।"

उत्तर : वीर रस।

2. किसी कविता का अनुकरण व्यंग्यात्मक अर्थात् पैरोडी का रूप कौनसा रस उत्पन्न करता है?

उत्तर : हास्य रस।

3. वात्सल्य रस के कितने अंग हैं?

उत्तर : वात्सल्य रस के दो अंग हैं-
संयोग वात्सल्य और वियोग वात्सल्य।

4. शृंगार रस के कितने भेद हैं?

उत्तर : शृंगार रस के दो भेद हैं - संयोग शृंगार और वियोग या विप्रलंभ शृंगार।

5. निम्न काव्य पंक्तियों में कौन-सा रस निहित है?

"जसोदा हरि पालने झुलावै
हलरावै दुलरावै मल्हावै जोई सोई कछु गावै।"

उत्तर : वात्सल्य रस।

खण्ड-ग 34

(पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक पाठ्य-पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

यों खेलने को हमने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर। हाँ, इतना जरूर था कि उस जमाने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी जिंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरंभिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के हैं जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था गुजार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था।

1. लेखिका और उनकी बहनों के खेलने का दायरा कहाँ तक सीमित था? 2

उत्तर : लेखिका और उनकी बहनों के खेलने का दायरा पूरा मोहल्ला ही था। मोहल्ला अपने घर जैसा ही माना जाता था इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे।

2. घर की दीवारें मोहल्ले तक फैली होने का क्या आशय है? 2

उत्तर : इसका आशय है- लोग मोहल्ले के सब घरों को अपने घर जैसा मानते थे इसलिए वे किसी के भी घर में आसानी से आ जा सकते थे। कोई रोकटोक नहीं थी।

3. आस-पड़ोस के कुछ घरों का आपसी व्यवहार कैसा था? 2

उत्तर : आस-पड़ोस के कुछ घरों का आपसी व्यवहार अपने घर जैसा आत्मीय था। सब घरों के लोग किसी अन्य घर के बच्चों को अपने बच्चे जैसा ही मानते थे।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुककर नेताजी की मूर्ति को क्यों निहारते थे?

उत्तर : हालदार साहब के मन में देश भक्ति और प्रतिमा के प्रति लगाव था और साथ–ही–साथ उनके मन में नेताजी की मूर्ति पर चश्मा देखने की उत्सुकता भरी लालसा रहती थी। इसलिए वे सदैव चौराहे पर रुककर नेताजी की मूर्ति को निहारते थे।

2. बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे– पाठ के आधार पर उन प्रसंगों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

उत्तर : वे समाज की मान्यताओं को नहीं मानते थे। वे अपने अंतर्मन की आवाज ही सुनते थे। समाज की मान्यता है कि पति की चिता को पत्नी आग नहीं दे सकती। पत्नी को चाहिए कि पति की मृत्यु के बाद वह विधवा बनकर सास–ससुर की सेवा में दिन बिताए। बालगोबिन ने दोनों ही मान्यताओं का विरोध किया। उन्होंने अपने बेटे की चिता को पतोहू के हाथों से ही आग दिलवाई तथा उसे दूसरे विवाह के लिए स्वयं उसके भाइयों के साथ वापस भेज दिया।

3. नवाब साहब का 'खीरे को काटना, नमक–मिर्च बुरकना और सूँघकर फेंक देना' उनके किस स्वभाव को दर्शाता है?

उत्तर : नवाबों के मन में नवाबी की धाक जमाने की बात रहती है इसलिए वे समाज के सामान्य तरीकों को ठुकराते हैं तथा नए–नए सूक्ष्म तरीके खोजते हैं, जिससे उनकी अमीरी प्रकट हो। नवाब साहब अकेले में बैठे–बैठे खीरे खाने की तैयारी कर रहे थे। परंतु लेखक को देखकर अपनी नवाबी दिखाने का अवसर मिल गया। उन्होंने दुनिया की रीत से हटकर खीरे सूँघे और बाहर फेंक दिए। इस प्रकार उन्होंने लेखक के मन पर अपनी अमीरी की धाक जमा दी।

4. 'उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था।'– आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : उनका व्यक्तित्व करुणा की मूर्ति–सा था। उनके सौम्य–शांत चेहरे से करुणा टपकती थी। उनके पास रहकर परम शांति और तृप्ति मिलती थी। उनसे बात करके नए–नए कर्म करने की प्रेरणा मिलती थी। हर व्यक्ति उनसे स्नेह और सहारा प्राप्त करता था।

5. बिस्मिल्ला खाँ हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रतीक थे, कैसे?

उत्तर : बिस्मिल्ला खाँ हिंदुओं और मुसलमानों की मिली–जुली संस्कृति के प्रतीक थे। वे स्वयं सच्चे मुसलमान थे। उनकी मुस्लिम धर्म, उत्सवों और त्योहारों में गहरी आस्था थी। वे मुहर्रम सच्ची श्रद्धा से मनाते थे। वे पाँचों समय की नमाज अदा करते थे। साथ ही वे जीवन भर काशी, विश्वनाथ और बाला जी के मंदिर में शहनाई बजाते रहे। वे गंगा को मैया मानते रहे। वे काशी से बाहर रहते हुए भी बालाजी के मंदिर की ओर मुँह करके प्रणाम किया करते थे। उनकी इसी सच्ची भावना के कारण उन्हें हिंदु–मुस्लिम एकता का प्रतीक कहा गया।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

एक के नहीं,
दो के नहीं,
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू :
एक के नहीं,
दो के नहीं,
लाख–लाख कोटि–कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा :
एक ही नहीं, दो ही नहीं,
हजार–हजार खेतों की मिट्टी का गुण–धर्म।

1. 'ढेर सारी नदियों के पानी का जादू' का भाव स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : कवि के कहने का भाव है कि फसल में एक नहीं बल्कि सारे देश की अनेक नदियों का पानी जाता है तब जाकर अन्न का उत्पादन होता है। जल के कारण ही फसलें लहलहाती हैं।

2. कवि बार–बार कहता है 'एक के नहीं, दो के नहीं, हजार–हजार के', कारण स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : कवि यह बताना चाहते हैं कि कृषक द्वारा उगाई गई फसल यों ही नहीं पक जाती, उसमें हजारों, करोड़ों हाथों, जल, मिट्टियों के गुण, करोड़ों किसानों के श्रम और खुली हवा–धूप आदि का योग होता है। यहाँ कवि अन्न के दाने का महत्व प्रतिपादित करते हैं।

3. 'हजार–हजार खेतों' का अर्थ स्पष्ट कीजिए और बताइए हजारों खेतों की मिट्टी का गुण–धर्म किसके लिए सहायक होता है? 2

उत्तर : इसका अर्थ है– अनेक एवं असंख्य खेत, खेतों की मिट्टी का गुण–धर्म 'फसल' के लिए सहायक होता है। फसल के लिए मिट्टी आवश्यक है, जो जीवन के लिए अन्न देती है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या–क्या विशेषताएँ बताई?

उत्तर : लक्ष्मण ने वीर योद्धा के बारे में बताया कि सच्चा वीर रणभूमि में वीरता दिखलाता है, अपना गुणगान नहीं करता। सच्चा वीर अपने बारे में बढ़–चढ़कर नहीं बोलता। सच्चा वीर साहसी, विनम्र तथा पराक्रमी होता है। वह अपशब्दों का प्रयोग नहीं करता।

2. 'अट नहीं रही है' कविता का क्या संदेश है?

उत्तर : इस कविता का संदेश प्रकृति के उल्लास को प्रकट करना है और जीवन को नए रंग और उमंग से भर देना है। कवि वसंत की सुंदरता को दिखाकर मनुष्य के भावों में नए–नए रंग लाना चाहता, उनमें नया उत्साह भरना चाहता है।

3. 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं? कविता 'छाया मत छूना' के आधार पर बताइए।

उत्तर : 'मृगतृष्णा' का अभिप्राय है– दूर से वास्तविक दिखने वाली अवास्तविकता। गर्मी की चिलचिलाती धूप में दूर सड़क पर पानी की चमक दिखाई देती है। वहाँ जाकर देखो तो कुछ नहीं होता है। इस कविता में इसका अर्थ छलावे और भ्रम के लिए किया गया है। जीवन की कल्पनाओं और झूठी भावनाओं को मृगतृष्णा कहा गया है।

4. 'अंतरे की जटिल तानों के जंगल में खोने' का क्या अर्थ है?

उत्तर : 'अंतरे की जटिल तानों के जंगल में खोने' का अर्थ है– गाते–गाते मुख्य लय–तान को छोड़कर किसी और ही लय–तान के जटिल–स्वर में खो जाना, अर्थात् अपने मूल स्वर से भटक जाना।

5. 'कन्यादान' कविता की माँ परंपरागत माँ से कैसे भिन्न है?

उत्तर : 'कन्यादान' कविता की माँ परंपरागत माँ से भिन्न है। वह जागरूक है, अपने अधिकारों के प्रति सचेत है। इसलिए अपनी बेटी को भी जागरूक बनाना चाहती है। परंपरागत माँ बेटी को संस्कार देती है कि वह अपना सर्वस्व त्याग करके ससुराल में सभी को प्रसन्न रखे।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए– $3 \times 2 = 6$

1. देश के प्राकृतिक स्थानों के सौंदर्य का आनंद लेते समय अधिकांश सैलानी वहाँ के पर्यावरण को दूषित कर देते हैं। इस नैसर्गिक सौंदर्य की सुरक्षा में आप अपने दायित्व का निर्वाह कैसे करेंगे? 'साना–साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।

उत्तर : आजकल सैलानियों के कारण पहाड़ों आदि प्राकृतिक स्थलों पर वाहनों की आवाजाही काफी बढ़ गई है, जिससे वहाँ की वायु भी प्रदूषित होती है। जहाँ तक संभव हो सके, वहाँ तक पैदल यात्रा करनी चाहिए तथा सार्वजनिक यातायात का प्रयोग करना चाहिए। वहाँ कूड़ा, कचरा, प्लास्टिक इत्यादि नहीं फैलाना चाहिए। लोगों को इस बारे में जागरूक करना चाहिए। मैं इन सभी लिखित बातों को ध्यान में रखते हुए अपने दायित्व का निर्वाह करूँगा।

2. बालक संकट के क्षण में पिता के पास क्यों नहीं जाता है? 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'माता का अँचल' पाठ बाल मनोविज्ञान का बहुत सुंदर उद्घाटन करता है। यद्यपि पिता शरीर से बलवान होते हैं। इसलिए वे बच्चे को अधिक सुरक्षा दे सकते हैं। फिर भी बच्चे पिता के पास न जाकर अपनी माँ की गोद में शरण लेना पसंद करते हैं। कारण यह है कि माँ की गोदी में जैसी ममता होती है, लाड होता है, वही उसके जख्मों को भरकर सुरक्षा दे सकता है। बालक भोलानाथ साँप के भय से सुरक्षा चाहता था। वह ऐसे स्थान पर छिप जाना चाहता था जो सुरक्षित हो। इसके लिए सबसे उत्तम जगह थी माँ की गोद। फिर माँ के हाथों के स्पर्श से उसे सहलाना और लोरी गाकर या प्यार भरे वचनों से दुलारना उसे बहुत सुरक्षा देता है।

3. नाक मान–सम्मान व प्रतिष्ठा का द्योतक है। यह बात पूरी व्यंग्य रचना में किस तरह उभरकर आई है? लिखिए।

उत्तर : इस पाठ में नाक मान–सम्मान और प्रतिष्ठा की परिचायक है। जॉर्ज पंचम भारत पर विदेशी शासन के प्रतीक हैं। उनकी कटी हुई नाक उनके अपमान की प्रतीक है। इसका अर्थ है कि आजाद भारत में जॉर्ज पंचम की नीतियों को भारत–विरोधी मानकर अस्वीकार कर दिया गया।

रानी एलिजाबेथ के आगमन से सभी सरकारी अधिकारी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध अपनी नाराजगी व्यक्त करने की बजाय उनकी आराधना में जुट गए। जॉर्ज पंचम का भारत की धरती से कोई अनुराग नहीं था। उनकी आस्था पूरी तरह विदेशी थी। उनकी मूर्ति का पत्थर तक विदेशी था। फिर उनका मान–सम्मान किसी भारतीय नेता या बलिदानी बच्चों से भी अधिक नहीं था। उनकी नाक भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों की नाक से नीची थी। इसके बावजूद सरकारी अधिकारी उसकी नाक बचाने में लगे रहे। लाखों–करोड़ों रुपया बर्बाद कर दिया। यहाँ तक कि अंत में किसी जीवित व्यक्ति की नाक काटकर जॉर्ज पंचम की नाक पर बिठा दी गई। यह पूरी भारतीय जनता के आत्मसम्मान पर चोट है।

खण्ड–घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए– 10

(1) साहित्य और समाज

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ साहित्य का महत्व ✲ साहित्य एवं समाज के बीच संबंध ✲ साहित्य का समाज पर प्रभाव ✲ उपसंहार।

(2) लोकतंत्र और चुनाव

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ लोकतंत्र में चुनाव की प्रक्रिया ✲ टिकट पाने की होड़ ✲ अमर्यादित रूप से चुनाव का प्रचार–प्रसार ✲ उपसंहार

(3) इंटरनेट की दुनिया

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ भारत एवं विश्व में इंटरनेट की स्थिति ✲ इंटरनेट के लाभ ✲ इंटरनेट के दुष्परिणाम ✲ उपसंहार

उत्तर :

(1) साहित्य और समाज

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ साहित्य का महत्व ✲ साहित्य एवं समाज के बीच संबंध ✲ साहित्य का समाज पर प्रभाव ✲ उपसंहार।

भूमिका– मनुष्य द्वारा संचित किया गया ज्ञानकोश ही साहित्य कहलाता है। अनेक विद्वानों ने इसे परिभाषित करने का प्रयास किया है। मुंशी प्रेमचंद ने साहित्य को 'जीवन की आलोचना' की संज्ञा दी है। उनके अनुसार, साहित्य चाहे निबंध के रूप में हो, कहानी के रूप में हो या काव्य के रूप में, उसे हमारे जीवन की आलोचना और व्याख्या करनी चाहिए।

साहित्य का महत्व– वास्तव में, साहित्य का महत्व बहुत ही व्यापक है। साहित्य से अपने अतीत के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है। साहित्य से ही हमें इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, परंपराओं आदि की जानकारी मिलती है। किसी भी राष्ट्र अथवा सभ्यता को जानने का सबसे अधिक प्रभावशाली माध्यम वहाँ का साहित्य ही है। साहित्य हमारी जिज्ञासाओं को शांत कर हमारे ज्ञान–भंडार में वृद्धि करता है।

साहित्य एवं समाज के बीच संबंध– साहित्य और समाज का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। साहित्य न तो समाज को समझे बिना कुछ सीख सकता है, न ही कोई सीख दे सकता है। दूसरी ओर, यह भी सत्य है कि कोई भी समाज साहित्यविहीन नहीं होता है।

मानव की कल्पनाशीलता साहित्य के रूप में प्रकट होती रहती हैं। प्रत्येक रचनाकार कुल मिलाकर समाज–विशेष की ही देन होता है और समाज–विशेष की भाषा, संस्कृति, परंपराएँ, इतिहास आदि उसकी अभिव्यक्ति में स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। इसलिए जिस साहित्य का अपने समाज से जितना आदान–प्रदान होगा, वह साहित्य उतना ही जीवंत, संवेदनशील तथा प्रभावशाली होगा।

साहित्य का समाज पर प्रभाव– साहित्य मानवीय समाज के सुख–दुःख, आशा–निराशा और उत्थान–पतन का स्पष्ट चित्रण प्रस्तुत करता है। साहित्य की इन्हीं विशेषताओं के कारण इसे समाज का दर्पण कहा गया है।

जिस काल की परिस्थितियाँ जैसी होंगी, उसका साहित्य भी वैसा ही होगा। साहित्य सामाजिक प्रक्रिया की आर्थिक, राजनीतिक और अन्य परिस्थितियों से प्रभावित होता है तथा उन्हें प्रभावित भी करता है। साहित्य समाज की विवेकशक्ति को जाग्रत करता है एवं जनमानस को आगे बढ़ने की दिशा और प्रकाश देता है।

उपसंहार– वास्तव में, साहित्य गतिमान है। इसकी रचना करने वाला भी यह नहीं बता सकता कि उसके द्वारा रचे हुए साहित्य की गूँज कब और कहाँ तक जाएगी? अंत में यही कहा जा सकता है कि साहित्य अतीत और भविष्य के मध्य एक सेतु है, जो हमें श्रेष्ठ जीवन की ओर ले जाता है।

(2) लोकतंत्र और चुनाव

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ लोकतंत्र में चुनाव की प्रक्रिया ✲ टिकट पाने की होड़ ✲ अमर्यादित रूप से चुनाव का प्रचार–प्रसार ✲ उपसंहार

भूमिका– अब्राहम लिंकन ने लोकतंत्र को परिभाषित करते हुए कहा था– "लोकतंत्र जनता के लिए, जनता द्वारा, जनता का शासन है।" लोकतंत्र सर्वोत्तम शासन प्रणाली है, जिसमें जनता की इच्छाओं को साकार करने के लिए जनता के प्रतिनिधि ही शासन संचालित करते हैं।

लोकतंत्र में चुनाव की प्रक्रिया– भारतीय लोकतंत्र में जनता प्रत्येक चुनाव से अपने प्रतिनिधियों को प्रत्यक्ष मतदान द्वारा चुनती है। भारत में प्रत्येक 5 वर्ष के अंतराल पर चुनाव आयोजित किए जाते हैं। यह चुनाव का समय ही होता है, जब आसमान में उड़ने वाले सभी नेता वापस धरती पर आते हैं अर्थात् इसी दौरान उन्हें आभास होता है कि वे निरंकुश नहीं हैं, उन पर जन–इच्छा का नियंत्रण है। चुनाव का सबसे उज्जवल पक्ष यही है। चुनाव के समय प्रत्येक मतदाता की कीमत बढ़ जाती है।

टिकट पाने की होड़– आजकल लोकतंत्र की वास्तविकता केवल सिद्धांतों तक सीमित रह गई हैं, उसका व्यावहारिक पक्ष अत्यंत घृणित एवं खराब हो गया है। लोकतंत्र को स्थापित करने वाली प्रक्रिया चुनाव प्रणाली है, लेकिन इसके साथ भी अनेक नकारात्मक पक्ष जुड़ गए हैं। अनेक समुदाय अपने ही समुदाय के सदस्य को जन–प्रतिनिधि बनाना चाहते हैं।

सभी अपने–अपने महत्व को दिखाने के लिए अपने नेता, अपने गुट एवं दल के सदस्य को चुनाव में खड़ा करते हैं। राष्ट्रीय दलों के प्रत्याशी के रूप में टिकट पाने के लिए अनेक लोगों के बीच प्रतिस्पर्द्धा शुरू हो जाती है। अंततः टिकट पाने में सफलता प्राप्त करने वाले प्रत्याशी का उत्साह सातवें आसमान पर चढ़ जाता है। चुनाव–प्रचार का अराजकता भरा वातावरण शुरू हो जाता है। संपूर्ण परिवेश रंगीन झंडों, बैनरों, नारों, पोस्टरों, चीखते लाउडस्पीकरों, प्रचार करती गाड़ियों आदि से सराबोर हो जाता है।

अमर्यादित रूप से चुनाव का प्रचार–प्रसार– आजकल चुनाव–प्रचार के समय राजनीतिक दलों द्वारा न्यूनतम मर्यादाओं का भी पालन नहीं किया जाता है। सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए नैतिकता समाप्त होती जा रही है। इसके कारण पूरा वातावरण अत्यंत दूषित हो जाता है। नेताओं की छल भरी बातों एवं घातों से भोली–भाली जनता आहत हो जाती है। मीडिया की सक्रियता के कारण राजनीति आज घर–घर तक पहुँच चुकी है और लोग चुनाव को लेकर बहुत संवेदनशील एवं सतर्क हो गए हैं।

उपसंहार– अनेक सुधारों के पश्चात् भी लोकतंत्र में चुनाव–प्रणाली की जितनी सार्थक भूमिका होनी चाहिए, वह अभी भी नहीं दिखती है। आज भी जाति एवं धर्म के आधार पर मतदान होता है, आज भी बाहुबली जेलों में रहते हुए चुनाव जीत जाते हैं, आज भी सदन में बैठने वाले अनेक जन–प्रतिनिधियों की वास्तविक छवि आपराधिक है, आज भी निरक्षर एवं भ्रष्ट लोग जनता के प्रतिनिधि बन जाते हैं। यह सब लोकतंत्र के अच्छे भविष्य के लिए शुभ संकेत नहीं है।

गोलियों से छलनी जनतंत्र हो गया है।
गणतंत्र अब हमारा 'गन' तंत्र हो गया है।

(3) इंटरनेट की दुनिया

संकेत–बिंदु : ✲ भूमिका ✲ भारत एवं विश्व में इंटरनेट की स्थिति ✲ इंटरनेट के लाभ ✲ इंटरनेट के दुष्परिणाम ✲ उपसंहार

भूमिका– विज्ञान के कारण पहले कंप्यूटर का जन्म हुआ और फिर कंप्यूटर से इंटरनेट का। इंटरनेट न केवल मानव के लिए अति उपयोगी सिद्ध हुआ है, बल्कि संचार में गति एवं विविधता के माध्यम से इसने दुनिया को बिल्कुल बदलकर रख दिया है। इंटरनेट ने भौगोलिक सीमाओं को समेट दिया है।

भारत एवं विश्व में इंटरनेट की स्थिति– भारत में इंटरनेट सेवा की शुरुआत बी.एस.एन.एल. ने वर्ष 1995 में की थी। अब एयरटेल, जिओ, वोडाफोन जैसी दूरसंचार कंपनियाँ भी इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराती हैं। आज विश्व के कुल 6.8 अरब से अधिक लोगों में लगभग 2 अरब लोग इंटरनेट से जुड़े हुए हैं। पूरे विश्व में इंटरनेट से जुड़ने वाले लोगों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है।

इंटरनेट के लाभ– कंप्यूटर नेटवर्क का आविष्कार सूचनाओं को साझा करने के उद्देश्य से किया गया था। पहले इसके माध्यम से किसी भी प्रकार की सूचना को साझा करना संभव नहीं था, किंतु अब सूचना प्रौद्योगिकी के युग में दस्तावेजों एवं ध्वनि के साथ–साथ वीडियो का आदान–प्रदान करना भी संभव हो गया है।

इंटरनेट ने खास लोगों से लेकर आम लोगों तक सभी के जीवन को गति प्रदान की है। इससे मानव को अनेक सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं, जैसे– पुस्तक ऑर्डर करना, रेल–हवाई जहाज की टिकट कराना, मित्रों से ऑनलाइन चैटिंग करना आदि।

इंटरनेट ने सरकार, व्यापार और शिक्षा को नए आयाम प्रदान किए हैं। सरकारें अपने प्रशासनिक कार्यों के संचालन, विभिन्न कर प्रणाली, प्रबंधन और सूचनाओं के प्रसारण जैसे अनेकानेक कार्यों के लिए इंटरनेट का उपयोग करती हैं। नेता हो या अभिनेता, विद्यार्थी हो या शिक्षक, पाठक हो या लेखक, वैज्ञानिक हो या चिंतक सबके लिए इंटरनेट समान रूप से उपयोगी सिद्ध हो रहा है। अब इसके माध्यम से न केवल उच्च शिक्षा प्राप्त की जा सकती है, वरन् रोजगार की प्राप्ति में भी यह अत्यधिक सहायक सिद्ध होता है।

इंटरनेट के दुष्परिणाम– इंटरनेट के अनेक लाभ हैं, तो इसकी कुछ हानियाँ भी हैं। इसके माध्यम से अश्लील सामग्री बच्चों तक पहुँचनी सरल हो गई है। अनेक लोग इंटरनेट का दुरुपयोग अश्लील साइटों को देखने और सूचनाओं को चुराने में करते हैं। इससे साइबर अपराधों में वृद्धि हुई है। इंटरनेट से जुड़ते समय वायरसों द्वारा सुरक्षित फाइलों के नष्ट या संक्रमित होने का खतरा भी बना रहता है। इन सबके अतिरिक्त बहुत–से लोग इस पर अनावश्यक और गलत आँकड़े एवं तथ्य भी प्रकाशित करते रहते हैं। इस प्रकार इंटरनेट यदि ज्ञान का सागर है, तो इसमें 'कूड़े–कचरे' की भी कमी नहीं है। इसलिए हमें इसका प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

उपसंहार– इसमें संदेह नहीं है कि इंटरनेट ने अनेक सुविधाएँ उपलब्ध करवाई हैं, परंतु यह आवश्यक है कि मनुष्य इसका सही ढंग से प्रयोग करें। साथ ही इसका विस्तार क्षेत्र पूरे देश में बढ़ाया जाना चाहिए।

12. आपके मित्र के पिता जी सीमा पर शहीद हो गए हैं, यह समाचार प्राप्त होने पर अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए मित्र को संवेदना पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर :

6/25, गौराई रोड
बोरीवली (ईस्ट)
मुंबई
दिनांक– 2 मार्च, 2019

प्रिय रविन्द्र,

कल ही तुम्हारे पिता जी के सीमा पर शहीद होने का दुःखद समाचार सुना। मैं बहुत शोकाकुल हो गया हूँ। मुझे अच्छी तरह से याद है कि कुछ महीनों पहले जब मैं तुम्हारे घर आया था तो मेरी मुलाकात तुम्हारे पापा से हुई थी। खबर सुनकर मुझे तो विश्वास ही नहीं हुआ। ईश्वर की लीला कितनी विचित्र है। हम सब उसके हाथ की कठपुतलियाँ हैं। मैं जानता हूँ कि तुम सब पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है। घर की जिम्मेदारी तुम पर आ पड़ी हैं। तुम्हें अपने पिताजी पर गर्व होना चाहिए कि वह देश के लिए शहीद हो गए। तुम धैर्य से काम लेना। माँ और छोटे भाई–बहनों का ध्यान रखना।

मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह तुम्हें और तुम्हारे परिवार को दुःख की असीम घड़ी को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

अंत में ईश्वर से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

तुम्हारा मित्र
रजनीश

अथवा

बिजली विभाग के अधिकारी को बिजली के अधिक बिल आने की शिकायत करते हुए एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

सुनयना शर्मा
345, गली न. 4
जहाँगीरपुरी, दिल्ली
विद्युत अधिकारी
एन.डी.पी.एल.
जहाँगीरपुरी, दिल्ली

विषय : बिजली का अधिक बिल आने की शिकायत हेतु।

महोदय,

निवेदन है कि इस बार हमारे घर का बिजली का बिल अचानक बहुत अधिक आ गया है जबकि हमारी खपत पहले की तरह है। पहले हमारा बिल ₹500 आया करता था जबकि इस बार ₹ 5000 आ गया है। एकदम दसगुना बिल, किसी-न-किसी गड़बड़ी के कारण आया है। आपसे निवेदन है कि हमारे मीटर, बिल और खपत की जाँच करें तथा यथाशीघ्र बिल ठीक करें।

धन्यवाद!

भवदीया
सुनयना शर्मा
मोबाइल : 9999444555

13. उत्तराखण्ड राज्य के पर्यटन विभाग की ओर से राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में तैयार कीजिए। 5

उत्तर :

उत्तराखण्ड में आपका स्वागत है।

पेड़-पौधे, हरियाली और बर्फ का अंबार है।
देवों की धरती है वह, यहाँ प्यार ही प्यार है।
उत्तराखण्ड राज्य पर्यटन विभाग की ओर से आप सबका उत्तराखण्ड भ्रमण पर हार्दिक स्वागत है।
संपर्क करें- 0862-9376288

अथवा

जसवंत नगर, कोटा के नेशनल हैण्डलूम में 2 अक्टूबर से सूटों-साड़ियों पर 25% की छूट दी जा रही है। एक विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में तैयार कीजिए।

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

WWW.CBSE.ONLINE

उत्तर :

धमाका! 25% की छूट धमाका

नेशनल हैण्डलूम
जसवंत नगर, कोटा
2 अक्टूबर से 11 अक्टूबर तक
साड़ियों और **लेडीज सूटों** पर **25%** की छूट घोषित करता है।
नया माल! नए डिजाइन! नई योजना!
मौका मत छोड़िए। जल्दी कीजिए!